बिहार की जनजातियों के सामाजिक, सांस्कृतिक गतिशीलता में सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं की भूमिका

प्रियंका कुमारी

संविधान में कहीं भी ''जनजाति'' शब्द की सुव्यक्त परिभाषा नहीं है। वस्तुतः इसकी सम्पूर्ण और सुस्पष्ट संख्या कहीं भी नहीं मिलती। आम आदमी के लिये यह शब्द अपने विलक्षण ''आचरणों एवं रीति–रिवाजों के साथ पर्वतों और जंगलों में रहने वाले सीधे''–सरल जनमसूह की ओर इंगित करता है, जिन्हें कुछ अधिक जानकारी है वे इस शब्द का अर्थ लोग समुदाय के उन मनोरंजक लोगों से लगाते हैं जो अपने नृत्य, गीत और वनोषधियों के लिये विख्यात हैं। प्रशासन की दृष्टि में यह नागरिकों का वह वर्ग है जिनकी विशेष जिम्मेदारी भारत के राष्ट्रपति पर है, और मानवशास्त्री के लिये यह एक सामाजिक वृत के अध्ययन का विशिष्ट क्षेत्र हैं।